

वीतरागता की पोषक ही, जिनवाणी कहलाती है।
यह है मुक्ति का मार्ग निरन्तर, हम को जो दिखलाती है॥
उस वाणी के अन्तर्तम को, जिन गुरुओं ने पहिचाना है।
उन गुरुवर्यों के चरणों में, मस्तक बस हमें झुकाना है॥
दिन-रात आत्मा का चिन्तन, मूढ सम्भाषण में वही कथन।
निर्वस्त्र दिगम्बर काया से भी, प्रकट हो रहा अन्तर्मन॥
निर्ग्रन्थ दिगम्बर सदज्ञानी, स्वातम में सदा विचरते जो।
ज्ञानी-ध्यानी-समरससानी, द्वादश विधि तप नित करते जो॥
चलते-फिरते सिद्धों-से गुरु-चरणों में शीश झुकाते हैं।
हम चलें आपके कदमों पर, नित यही भावना भाते हैं॥
हो नमस्कार शुद्धातम को, हो नमस्कार जिनवर वाणी।
हो नमस्कार उन गुरुओं को, जिनकी चर्या समरससानी॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

(दोहा)

दर्शन दाता देव हैं, आगम सम्यग्ज्ञान।

गुरु चारित्र की खानि हैं, मैं वंदौं धरि ध्यान॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ, फिर जग कीच बीच नहीं आऊँ॥टेक॥
जल गंधाक्षत पुष्प सुमोदक, दीप धूप फल सुन्दर ल्याऊँ।
आनन्द जनक कनक भाजन धरि, अर्घ अनर्घ बनाय चढ़ाऊँ॥१॥
आगम के अभ्यास मांहिं पुनि, चित एकाग्र सदैव लगाऊँ।
संतनि की संगति तजि के मैं, अंत/और कहूँ इक छिन नहिं जाऊँ॥२॥
दोषवाद में मौन रहूँ फिर, पुण्य पुरुष गुण निश-दिन गाऊँ।
मिष्ट स्पष्ट सबहिं सो भाषु, वीतराग निज भाव बढ़ाऊँ॥३॥
बाहिर दृष्टि ऐंच के अन्तर, परमानन्द स्वरूप लखाऊँ।
‘भागचन्द’ शिव प्राप्त न जौलौं, तोलौं तुम चरणाम्बुज ध्याऊँ॥४॥